अरब देशों में आन्दोलन क्यों, कैसे और कहां?

दिनांक 05.04.2012 को दिल्ली में सुश्री तवक्कुल करमन द्वारा दिया गया 5वां बाबू जगजीवन राम स्मृति व्याख्यान।

प्रिय भाइयो और बहनो,

आपको शांति मिले।

मैं, सबसे पहले नई दिल्ली, भारत की राजधानी, विश्व में सबसे बड़े लोकतंत्र और विविधता तथा बहुलवाद के एक सबसे प्राचीन और समृद्धि देश में होने पर गर्व और अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त करती हूं।

मुझे गर्व है कि मैं, महात्मा गांधी के देश में हूं जिन्होंने शांतिपूर्ण संघर्ष की ओर प्रेरित किया था और आप परिवर्तन और सुधार के लिए अहिंसक संघर्ष के कार्यक्रम के प्रणेता हैं। मैं, महात्मा गांधी की आत्मा को अरब मूल के युवाओं के सलाम का पैगाम देती हूं जो उनके उत्साह और संघर्ष द्वारा प्रेरित हुए और अब वे अपनी शांतिपूर्ण क्रांति चला रहे हैं जिसने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया है।

मुझे गर्व है कि मैं, नेहरू और इंदिरा गांधी के देश में हूं।

मुझे फक्र है कि हम अपने मानव इतिहास में से महान नेताओं एक महान महिला अधिकारों के जनक बाबू जगजीवन राम जी की जयंती मना रहे हैं।

मुझे यह कहने की इजाजत दें कि हम न केवल भारत के अहिंसा आन्दोलन के जनक महात्मा गांधी और उनकी शांति प्रिय आत्मा से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं बल्कि हम, इसकी विविधा और बहुलवादिता तथा इसके सहयोगी, समेकित, सहभागी, सह-अस्तित्व से भी प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं।

प्रिय बहनो और भाइयो

वफादारी का कर्तव्य हमें वह पूरा करने का आदेश देता है जिसकी शुरूआत मानवता के महान नेता महात्मा गांधी द्वारा की गई थी। मैं, भारतीय राष्ट्र के इसके सभी घटकों, जनता और निजी संस्थाओं तथा इसके असरदार तबकों के बौद्धिक, राजनीतिक तथा मीडिया क्षेत्रों के सतत योगदान और निम्न जाति के लोगों द्वारा सहन किए गए भेदभाव के सभी रूपों को समूल नष्ट करने के प्रयासों का आह्वाहन करती हूं। मैं भारत का, महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर अहिंसक

और अरब मूल के देशों द्वारा शांतिपूर्वक संघर्षों का समर्थन करके विशेष रूप से उनका जो तानाशाह को गिराने के लिए लड़े जा रहे हैं, पर लौटने का भी आह्वाहन करती हूं। इन आन्दोलनों में आजादी और सम्मान की ललक रखने वाले हजारों शांतिप्रिय युवाओं ने भाग लिया है। मैं, उन सभी का वार्ता के लिए अरब लीग के आह्वाहन को बशर अल हसद के शासन पर दबाव डालने के लिए मानने के लिए तथा परिवर्तन के लिए वहां के लोगों की न्यायोचित मांगों का उत्तर देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन करने का आह्वाहन करती हूं।

प्रिय मित्रो,

यह दलील दी जा सकती है कि अरब देशों की क्रांतियां, मौजूदा और भावी, अरब युवाओं की राज्य की समान नागरिकता के लिए तात्कालिक आवश्यकता के प्रत्युत्तर में आयी हैं और आएंगी जिसमें वे आजादी, सम्मान और बिना किसी भेदभाव के समान अधिकार पाऐंगे।

यह स्पष्ट है कि अरब मूल के देशों की एक समान अवधारणा है कि नागरिकों का सम्मान नहीं है, उनकी आजादी गायब है, उनके अधिकार शासकों और तानाशाहों द्वारा रौंदे जाते हैं जिन्होंने देश को अपने निरंकुश शासन के लम्बे दशकों के दौरान राष्ट्रपति और उसके परिवार का मात्र खेत अथवा निजी व्यवसाय बना दिया है। दुर्भाग्यवश, वह और उसका परिवार राज्य संपत्ति को फिजूल खर्ची, अविवेकी और अनुचित इसके विपरीत क्या हममें से कोई भी अपनी व्यक्तिगत संपत्तियों के संबंध में करेंगे, बर्बाद किया है!!

अरब देशों में क्रांतियों द्वारा गिराए गए शासनों और गिरने वाले शासनों में सामान्य सार तथ्य यह है कि राष्ट्रपति दशकों के लिए राष्ट्रपति रहता है और सभी निर्णय करने की शक्तियों तथा सत्ता का नियंत्रण उसके परिवार में निहित रहता है और उनके अपने-आपको 'प्रजातंत्रिक देश' कहने के बावजूद तथा उनके संविधान में यह उल्लेख होने के बावजूद कि संप्रभुता लोगों के पास है और कि लोग शक्ति के वास्तविक मालिक हैं किन्तु हम जन्में थे और हम रहते थे और प्रतीत हुआ कि हम मर जाएंगे किन्तु बशर और उसका परिवार, अली सालेह और उसका परिवार, मुबारक और उसका परिवार, बैन अली और गद्दाफी सदैव सत्ता में रहेंगे और जब तक कि हम यह कहते रहेंगे कि वे कभी नहीं मरेंगे!!!

मैं विश्वास के साथ यह भी कह सकती हूं कि हमारी शांतिपूर्ण क्रांतियां जो एक पौराणिक साहस और नैतिक प्रतिबद्धता के साथ आरम्भ हुई हैं, जो सभी अरब देशों में राज्य के भाई भतीजावाद, रिश्वतखोरी, अन्यायपूर्ण शासन तथा स्वयं शासक और उसके परिवार के लिए शक्ति के पूर्ण दुरुपयोग और दोहन के परिणामस्वरूप हमारी हताशा से उत्पन्न हुई हैं।

क्रांतियां तात्कालिक आंतरिक प्रतिक्रिया के कारण आयी हैं न कि बाहरी आदेशों के परिणामस्वरूप। वे न केवल अंतर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय षड़यंत्रों और दुर्भावनाओं जैसा कि शासन के अवशेषों और उनके भाई-भतीजावाद के नेटवर्कों तथा उनके अंतर्राष्ट्रीय प्रस्तावों को, जो अरब देशों के आन्दोलनों से भयभीत हैं जिन्हें विश्व के किसी भी भाग में दोहराया जा सकता है, जहां युवा पृथक्करण, दमन और उपेक्षा के शिकार हैं जैसा दावा किया जाता है, के परिणामस्वरूप आयी हैं।

अरब युवा ऐसे समय अपनी शांतिपूर्वक क्रांति लाए हैं जब सभी परम्परागत दलों और ताकतों के बीच निराशा का अत्यधिक बोलबाला था। उनका मानना था कि परिवर्तन कभी नहीं होंगे और लोगों में परिवर्तन लाने की मांग और इसके लिए बलिदान देने का साहस और इच्छा शक्ति नहीं थी तथा सबसे अहम उनका सपना भी नहीं था। उनके पास बेहतर भविष्य के लिए आकांक्षाएं भी नहीं थी जिनमें उनकी आजादियां संरक्षित हों और मानवीय सम्मान का आदर और अक्षुण्यता बनी रहे।

सभी लोगों के दिलों में यह दृढ़ विश्वास था कि शासक सत्ता, शांतिपूर्वक अथवा हिंसा द्वारा परिवर्तन के लिए किन्हीं मांगों को कुचलने की उनकी क्षमता के कारण मजबूत थे और कि शासकों के पास ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए सुरक्षा और पूर्णरूप से प्रशिक्षित और हथियारों से लैस सैनिक तंत्र था और जनता की मांगों, जिनके लिए शासक सावधानियां बरतता था और दशकों भर पर्याप्त तैयारियां करता था। शासक लोगों को अपने अधिकार प्राप्त करने से तथा सम्मानजनक जीवन और समान नागरिकता के लिए उनकी मांगों को पूरा करने से रोकने के लिए अपनी इच्छा से सभी संसाधनों का उपयोग करता था।

जिन देशों का यह विश्वास है कि सुधार बाहर से लाए जा सकते हैं और जिनके पास निरंकुश शासनों पर प्रजातंत्र और मानवाधिकारों के थोपने का एजेंडा है और वे देश जो यह भी विश्वास करते हैं कि बाहर से थोपे गए सुधार अव्यवहारिक विचार है और यह अत्यधिक रूप से खर्चीला तथा एक असफल विचार है। इस समय, इसे पुन: दोहराने की आवश्यकता नहीं है चूंकि यह सद्धाम हुसैन शासन में घटित हो चुका है। इस संबंध में यह विश्वास था कि सद्धाम हुसैन का शासन सीमाओं के बाहर से मिसाइलों द्वारा गिराया गया अंतिम शासनों में से एक था और जिसे उसके लोगों द्वारा तथा उनके संघर्षों और बलिदानों द्वारा नहीं गिराया गया था।

यह स्पष्ट था कि वे शासन, भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से, बाहरी संरक्षण और सहयोग प्राप्त थे और बाहरी ताक्तें उन्हें हटाना नहीं चाहती थी .... या तो इस कारण कि वे उस अपरिचित और अपरीक्षित शासन से आशंकित थे कि अथवा इस कारण कि वे बलपूर्वक परिवर्तन लाने और प्रजातंत्र थोपने में अक्षम्य थे या उनके इस विश्वास के कारण की शासन एक कमजोर अथवा प्रतिपक्ष विहीन सत्ता की तुलना में पर्याप्त मजबूत थे।

उन सभी के बीच, अरब देशों की क्रांतियां साहस, दृढ़ निश्चय और एक स्पष्ट लक्ष्य के लिए बलिदान करते हुए कि लोग इस शासन को गिराना चाहते थे, प्रदर्शित करते हुए हुई थी। इसे प्राप्त करने का एक मात्र साधन अपने जीवन की बलि देने और अस्त्र-शस्त्र विहीन किन्तु प्यार, शांति और सुहावने सपनों से ओत-प्रोत युवाओं की छातियों में गोलियां खाने के बावजूद उदारतापूर्वक बलिदान देते हुए शांतिपूर्ण संघर्ष हैं।

जो अन्यथा यह उम्मीद करते थे कि युवाओं को गोलियों से भूना जाएगा और बिना पीछे मुड़े, आगे बढ़ने अथवा चलने या रुकने मानो वे फूल और मिठाइयां प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं!! जिनका यह विश्वास होगा कि यह पूर्व अनुमान योग्य तथा निकट भविष्य में हो सकेगा!!

प्रचलित निराशाजनक वास्तविकता के कारण लोगों के बीच यह धारणा थी कि शांतिपूर्ण संघर्ष निरर्थक हैं और यह मात्र उदार और दयालु शासकों से अधिकार प्राप्ति का एक साधन हैं और न कि पारिवारिक शासनों से शांतिपूर्ण शासनों का बंदूकों, गोलियों, मिसाइलों से सामना करने के लिए तैयार करना तथा विभिन्न नामों से ज्ञात सुरक्षा और सैनिक तंत्र के माध्यम से लोगों को सताना और बलपूर्वक जेल में डालना। इन शासनों का किसी परिवर्तन और सुधार को रोकने तथा यह सुनिश्चित करने का एक आम लक्ष्य था कि तानाशाह राष्ट्रपति और उसका परिवार सत्ता में रहें और उन देशों में लोगों के धन और सत्ता को हड़पना जारी रखें जहा प्रजातंत्र का अस्तित्व नाममात्र है!!

ट्यूनीशिया में जासमिन क्रांति के अचानक और एक सप्ताह के भीतर फूट पड़ने, अरब युवाओं का आत्म-विश्वास तथा परिवर्तन लाने के बारे में अरब युवाओं की क्षमता में उनका विश्वास बढ़ना आरंम्भ हो गया विशेष रूप से उन देशों में जिनमें शांतिपूर्वक अरब आन्दोलन हुए थे।

यदि हम स्वतंत्र और सम्मानजनक जीवन चाहते हैं तो भाग्य निश्चित रूप से हमारा साथ देगा और हम तानाशाहों को गिराएंगे तथा सभी बाधाओं को समाप्त कर देंगे। हमें केवल यह करना होगा कि हम उसे बिना हथियारों अथवा पैसे या किसी प्रकार की संभार-तंत्रीय सहायता के बिना अथवा किसी प्रकार की बाहरी सहायता या समर्थन के बिना हासिल करने में सक्षम हैं। हमें लोगों के सामने यह राग अलापना है कि लोग शासन व्यवस्था को गिराना चाहते हैं और हमें गलियों में घूमना होगा। हमें तब तक नहीं रूकना होगा जब तक तानाशाह गद्दी नहीं छोड़ते और वह और उसका परिवार बिना किसी बिलम्ब के अथवा हिचकिचाहट के नहीं हटता। हमें तब तक नहीं रूकना होगा जब तक वे सत्ता नहीं छोड़ते।

विश्व ने दमन, गोलियां और शासकों के रांकेटों की मशीनों द्वारा निशाना बनाए जा रहे हजारों युवक देखें हैं किन्तु वे उन्हें अपनी गतिशील दृढ़ इच्छा और उनकी बलिदान की ताकत से पराजित हो रहे थे और उनके ऊपर विजय प्राप्त कर रहे थे।

प्रिय मित्रो! आप विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि अरब मूल के सभी देशों में अरब क्रांतियों में एक सामान्य तत्व था कि युवा पूर्णत: यह जानते हुए कि आजादी के लिए अपने जीवन की बलियां दे रहे थे कि वे मरने जा रहे हैं। जब हम आन्दोलनों में भाग लेते हैं हम यह निश्चित रूप से जानते हैं कि गुण्डे, कामरेड, मुखबिर और शासन की नागरिक सेना गलियों, छतों और प्रत्येक कोने में हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमारा यह विश्वास था कि शहादत किसी समय और कहीं हमारी प्रतीक्षा कर रही है। किन्तु हमारा यह अपेक्षाकृत अधिक विश्वास था कि हम गोली को पराजित करेंगे और हम जीतेंगे । और हमने ऐसा किया भी।

क्या आपने शांति, लड़ाई और धैर्य के दृश्य देखे हैं जिनमें युवा शांतिपूर्ण संघर्ष और आजादी और सम्मान के युद्ध में शांतिपूर्वक बलिदान में नजीरें पेश करते हुए शामिल हुए थे। जिनकी यह मांग थी कि हम अपनी सर्वोत्तम मूल्यवान वस्तु, हमारे जीवन और आत्मा को इसके लिए कुर्बान करते हैं।

जब, मैं यह कहती हूं कि अरब युवा मेरा मतलब उन अरब युवाओं से है जो परिवर्तन लाए थे और जिन्होंने बलिदान दिया था तथा जिन्होंने मिसाल पेश की थी..... यदि आप हमारे सभी अरब आन्दोलनों में शहीदों और घायलों की फेहरिस्त देखते हैं आप यह पाऐंगे कि वे सभी अथवा उनमें से अधिसंख्य 25 वर्ष से कम आयु के थे और उन्होंने अपने जीवन का तीसरा दशक पार नहीं किया था। वे अपने यौवनकाल में थे। किन्तु उनके पास युगों और सभी कालों और स्थानों की दृढ़ता की बुद्धिमता थी। यहां मैं पीढ़ियों के संघर्ष अथवा उनमें मतभेद का सुझाव नहीं दे रही हूं बल्कि मैं एक ऐसे सत्य को दोहरा रही हूं जो मैंने देखा है और स्वयं अनुभव किया है तथा क्रांतिकारियों की नैतिकता और न्याय के सिद्धांत तथा निष्पक्षता मुझे यह बोलने के लिए मजबूर करती है कि वह चीज जो दशकों पूर्व इस क्षेत्र में आजादी के लिए अन्य क्रांतियों से अरब मूल क्रांतियों से अलग करने की वास्तविकता है कि युवा अपनी क्रांति के चरणों को जानते हैं और वे यह जानते हैं कि वे क्या चाहते हैं...... वे जानते हैं कि उनकी क्रांतियां तानाशाह को गिराकर समाप्त नहीं होंगी बल्कि ये सत्ता और सुरक्षा तथा सैनिक तंत्र के नियंत्रण से उसे तथा उसके परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों को हटाने तथा भाई-भतीजावाद के नेटवर्क के समापन के पश्चात् आरम्भ होंगी। इसके लिए परिवर्तन काल तथा युवा की पसन्द की परिवर्तित सरकार अपेक्षित है जो देश को नागरिक राज्य में परिवर्तित करे जिसके लिए उन्होंने क्रांति की और सर्वोत्तम बलिदान दिए थे। यह प्राप्त करना सुनिश्चित करने के लिए कि वे युवा कार्रवाई को कायम रखें और जब कभी परिवर्तनशील अवधि से विचलन अथवा धीमापन या संस्थाओं का टकराव हो गलियों में निकलने के लिए युवा को तैयार रखना जारी रखेंगे। प्रतिमा नेता अथवा

प्रमुख दल की यह गारंटी नहीं है बल्कि यह विश्वास और सपने तथा बलिदान करने की क्षमता से लवरेज युवाओं की है।

यह भी कहा जा सकता है कि अरब मूल की सभी क्रांतियों का एक आम पहलू और एक आम विशेषता यह है कि वे सभी इन चरणों से गुजरी हैं। पहला चरण तानाशाह और उसके पारिवारिक सदस्यों तथा उसके भाई-भतीजावाद के नेटवर्कों को गिराना है जिसके पश्चात् एक परिवर्तन अवधि और चुनावों के माध्यम से तथा समाज की भागीदारी से एक नागरिक राज्य की स्थापना करना है तथा नागरिकों के लिए पूर्ण आजादियां और नागरिक अधिकार सुनिश्चित करने के लिए सभ्य समाज द्वारा शक्ति का स्थायी भार ग्रहण करना है। क्रियाविधियां और ब्यौरे प्रत्येक मामले की परिस्थितियों के अनुसार क्षेत्र-दर-क्षेत्र तथा देश-दर-देश भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, किन्तु सार रूप में ये सभी क्रांतियां इन चरणों से गुजरती हैं और समान परिणामों और नतीजों के साथ समाप्त होती हैं। मैं कह सकती हूं कि अरब मूल देशों की क्रांतियां कभी भी विफल नहीं होंगी बल्कि इनके परिणामस्वरूप वह प्राप्त होगा जो अत्यधिक सुन्दर और इतना बेहतर हो ताकि जिसका सटीक रूप से अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

युवाओं द्वारा आरम्भ की गई क्रांतियां लोगों की भागीदारी समाज के अपेक्षाकृत व्यापक तबकों और अल्प समय में तानाशाह की सभी ताकत को नेस्तनाबूद करने के लिए इस निमित्त कुर्बानी देने के लिए प्रेरित कर रही हैं। अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में सहभागिता और सहयोग पर आधारित ऐसी भावना शासन द्वारा वसीयत में मिली सभी समस्याओं के समाधान प्रदान करेंगी और उन सभी मुश्किलों और कठिनाइयों पर काबू पाने में सहायता करेंगी जो जहां-तहां उत्पन्न हो सकती हैं। तानाशाह की सत्ता बेदखली के कारण किसी देश में कोई आतंकवादी संगठन सत्ता नहीं हथियाएगा। इस प्रकार की आशंकाएं आधारहीन और सही नहीं हैं। आतंकवाद और भाई-भतीजावाद (तानाशाही) एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आतंकवादी और तानाशाह के सामान्य रणनीतिक हित और सामान्य विशेषताएं होती हैं। प्रत्येक तानाशाह एक आतंकवादी है और प्रत्येक आतंकवादी एक तानाशाह है। दोनों एक दूसरे को पोषित करते हैं और दोनों एक दूसरे को अपने उद्देश्यों को पूरा करने और अपने विरोधियों को दबाने के लिए उपयोग करते हैं। आतंकवादी, तानाशाह की मौजूदगी से अपनी वैधता साबित करते हैं। इसी प्रकार तानाशाह, आतंकवादी की मौजूदगी से सत्ता में बने रहने की अपनी वैधता साबित करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक दूसरे को एक सदोष और नारकीय चक्र में पोषित करते हैं जिसे केवल एक शांतिपूर्ण क्रांति द्वारा तोड़ा तथा इसके मलवे और अवशेषों को दफनाया जा सकता है।

शांतिपूर्ण क्रांति परिवर्तन लाने के लिए एक प्रचंड सक्षम विचार के रूप में आतंकवाद को समाप्त करती है। अक्सर, आतंकवादी संगठनों ने इस विचार को बढ़ावा दिया है कि केवल गोलियां और बिस्फोटक ही दशकों से शासन कर रहे शासनों को परिवर्तित कर सकते हैं और न कि भ्रामक प्रजातंत्र अपनाने वाले चुनावों और समूहों को प्रभावित करके।

शांतिपूर्ण सभाएं जिन्होंने अरब मूल के सभी देशों में अल्प समय में तानाशाह को गिराया है, ने एक और चीज को भी समाप्त किया है; शांतिपूर्ण संघर्ष का सांस्कृतिक तिरस्कार जो केवल हिंसा और गोली के बदले गोली के सिद्धांत से परिवर्तन लाने में सक्षम है, उनके इस विश्वास के कारण कि यह अहिंसक कार्यक्रम की महिमा को कम करता है।

कभी-कभी इस प्रकार की आशंकाएं सुनी जाती हैं कि इस्लामवादी अरब मूल क्रांतियों के माध्यम से शासकों को हटाएंगे। ऐसी आशंकाएं फैलाई और प्रोत्साहित की जा रही हैं जिनका यह निष्कर्ष निकलता है कि अरब मूल क्रांतियों में क्रांति की नैतिक ढाल नहीं है और इससे वांछित परिवर्तन आने की बजाए सबसे बुरे परिणाम निकलेंगे!!

मैं ऐसी आशंकाओं को प्रोत्साहित नहीं करने के नेक इरादे रखने वाले सभी लोगों से अपील करती हूं जो केवल तानाशाह के शासन को लम्बा खीचने में मददगार होगा और उन युवाओं के समर्थन को पराजित करता है जो शांतिपूर्ण क्रांतियों में अग्रणी रहे हैं। मैं, मेरे इस विश्वास से सहमत होने की अपील करती हूं कि सभी विचारधाराएं, दक्षिण पंथ, वामपंथ, इस्लामी, धर्मनिर्पेक्ष को सत्ता तक पहुंचने का अधिकार है और उसका उपयोग तानाशाह के प्रस्थान के पश्चात्, चुनावों के पश्चात् हो। उन्हें शासन करने का अधिकार है और परिणामों को स्वीकार करने तथा प्रजातांत्रिक प्रक्रिया के जनादेश को स्वीकार करना हमारा कर्त्तव्य है।

मैं, मेरे इस विश्वास से भी सहमत होने की अपील करती हूं कि इस्लामवादियों को सत्ता सौंपने का जब तक यथापेक्षित तथा लोगों द्वारा मांग किए गए विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ वे दलों में विकसित न हों उनका प्रयोग और परीक्षण करने के लिए लोगों के पास उपलब्ध एक मात्र साधन है। केवल तभी लोग उन्हें उनके कार्य-निष्पादन और देश के मामलों के संचालन में सफलता के आधार पर जांच सकते हैं जिसमें लोगों के लिए सम्मानजनक जीवन का मार्ग प्रशस्त हो और न कि धार्मिक दृष्टिकोण और दैवीय आधार। हमें उन्हें शासन में उनकी सफलता की ताकत के आधार पर समर्थन देना चाहिए और अथवा समर्थन नहीं देना चाहिए तथा न कि उपदेश देने के सत्रों और धार्मिक प्रवचनों के आधार पर?

यदि तानाशाह के प्रस्थान के पश्चात् शासन में एक या अधिक अवधियों के लिए इस्लामी दलों का प्रयोग किया जाता है तो वे अन्य राजनीतिक दलों के समान सामान्य राजनीतिक दल बना सकते हैं। लोगों को उनका आंकलन और जांच करने के लिए तथा चुनावी वादों को पूरा करने में उनकी सफलता के आलोक में, उन्हें चुनने का अवसर होगा। इसके परिणामस्वरूप, अतिवाद, आतंकवाद, हिंसा तथा धर्म के शोषण के स्त्रोतों को सुखाने में लम्बा समय लगेगा।

इस्लामी देश प्रजातांत्रिक बहुवाद और विविधता में समृद्ध हैं जैसे तुर्की, मलेशिया, इण्डोनेशिया और लेबनान इनकी सरजमीं पर आतंकवाद और विस्फोटकों की नगण्य मौजूदगी है। इसके अतिरिक्त, यदि एक शासक अथवा एक परिवार या एक दल सत्ता और धन के मामले में सर्वोपरि होता है, तो आतंकवादी समूहों के अवसर बढ़ने आरम्भ हो जाते हैं।

(अनुदित पाठ)